पथिक

''1992—1993 में, जब घर बार छोड़ कर, ब्रज में किसी ठिकाने की खोज में भटक रहे थे, उस समय अक्टूबर 1992 से जून 1993 तक बड़ी ठोकरें खाईं, बहुत कुछ सहा। उसी दौर में मेरी छोटी बहन देवाहुती ने, जो मेरे साथ ही भटक रही थी, कुछ लिखा, उसी की प्रतिक्रिया में 1993 की होली के तीन दिनों में कुछ कविताऐं अंतर से उमड़ीं, वे ही ''पथिक'' के रूप आप के सामने हैं।''

—शैलेन्द्र

मै नें चलना शुरू किया था
सुख की कल्पना में
कल्पना के रास्ते पर
कि शायद मुझे
मेरी मंज़िल मिल जायेगी,
पर चलते चलते
मैं अपनी राह से भटक गयी
और पहुँच गयी
सुख की खोज में
एक पथरीले रास्ते पर,
जहाँ सिर्फ तेज़ धूप थी
और तेज़ हवायें थीं।
रास्ते पर भटकती
मैं लम्बे समय तक चलती रही,
चलती रही कि शायद मुझे
मेरी मंज़िल मिल जाये,
थोड़ा सुख मिल जाये,
बस थोड़ा सा।
चलते चलते
मैं बहुत थक गई,
और आगे चलना,
आगे जाना संभव न था।
अभी तक जो मिला,
वह सुख छोड़ कर
और सब कुछ था,
मैं थक कर चूर हुई।
उन्हीं पत्थरों के ढेर पर बैठ गई,
जिन पर चलते हुए
मेरे पैरों में घाव हो गये थे।
धूप की तपन और तेज़ हवा से
शरीर सारा झुलस रहा था।
वहीं आँखें बंद कर,
मृत्यु का इंतज़ार कर रही थी।

आँसू भी रोते–रोते
साथ छोड़ चुके थे।
मैं बैठी थी पत्थरों पर
पथरायी सी सूनी आँखें लिए,
सारी तकलीफें ही
मेरी मित्र थीं।
उन्हों ने ही बस मेरा साथ
नहीं छोड़ा था।
अचानक किसी ने पुकाराः
''बस थक गईं,
मेरे साथ चलोगी?
तुम्हारी दुनिया का अन्त
यह नहीं।
थक कर चलना
बंद करने का
यह क्षण नहीं।
चलना तो तुम्हें
अब शुरू करना है,
चलो, मैं ले चलूँ तुम्हें
सही रास्ते पर।''
मुझे विश्वास नहीं आया
कि इस मोड़ पर भी
आ सकता है कोई
सहारा देने।
क्योंकि ठोकर खाना
आदत में आ गया था,
मानो ज़िन्दगी की
नियति बन गया था।
मैं घबरा गई
उस अपनत्व भरी वाणी से।
मुझे अजनबी सा लगा,
क्योंकि शायद मैं ने
पथरीले रास्तों की चुभन को ही

अपना साथी मान लिया था।
तभी उन्हों ने फिर कहाः
''चलो मेरे साथ
और बताओ मुझे
अपनी पीड़ायें,
मैं तुम्हारे साथ
तुम्हारा कष्ट बाँट लूंगा,
तुम्हारी घुटन दूर कर
उन पीड़ाओं से
मुक्त करा दूंगा,
जिन्हें तुम अपना साथी
और नियति मान बैठी हो।
तुम चलो मेरे साथ
उस सुहाने रास्ते पर,
जहाँ तुम्हें चलना है,
वे रास्ते पथरीले नहीं,
सिर्फ साँसों के सहारे
हृदय तक पहुँचने के रास्ते हैं।''

देवाहुती

1

जानते हो,
अभिव्यक्ति क्या होती है?
बता सकते हो,
अभिव्यक्ति क्या होती है?
क्या सोच पा रहे हो,
अभिव्यक्ति क्या होती है?
कोई कैसे व्यक्त करता है वह,
जो उमड़ता है उसके अंतर से?
नहीं जानते?
तो सुनोः
जिस की फूटती है अभिव्यक्ति,
वह ले कर भावों की कलम,
डूबो कर उसे अपने हृदय में,
बना कर खून को स्याही,
लिख देता है जीवन पर
कुछ पँक्तियाँ।
यही होती है अभिव्यक्ति,
हाँ, होती है अभिव्यक्ति यही,
यह लेखन नहीं होता,
यह अभिव्यक्ति होती है,
जो लिखी जाती है,
खून की स्याही से,
भावों की कलम ले कर,
जीवन के पन्नों पर

2

जीवन पथ पर
चलते हुये,
आगे जाने की
जल्दी में,
रखना तुम
याद उन्हें,
जो बन गये धूल,
क्योंकि कहीं
रूक गये थे।
मत करना
तुम घृणा
इस धूल से,
मत समझना
तुम श्रेष्ठ
स्वयं को
इस धूल से,
क्योंकि थक कर,
गिर जानेवाले
धूल हो गये,
नहीं हो पाये सफल
पहुँचने में वहाँ,
जहाँ जाने के लिये
उन्हों ने कभी
किया था प्रारंभ,
देंगे वे ही
प्रेरणा तुम्हें।
नहीं रूकने देगा तुम्हें
उन का यही अनुभव,
जो गिर कर कहीं
धूल बन गये।
याद रखना –
जीवन पथ पर
बिखरी यह धूल ही
तुम्हें काँटों से
बचायेगी,

हाँ, यही धूल।
यह न होती,
तो न जाने
कितने शूल
तुम्हें चुभ जाते!
यह पथ को तुम्हारे
सुखद बनायेगी।
चलते हुये
यदि रूक पाओ,
तो रूकना,
उठाना इसे,
हाँ, इसी धूल को,
और लगाना
अपने माथे से,
क्योंकि यही है
वह परिणाम,
जो रोकेगा तुम्हें
रूकने से
और पहुँचायेगा वहीं,
जहाँ पहुँचने के लिये
चलना प्रारंभ
किया था तुम ने।
लक्ष्य तक
यदि कभी
नहीं भी पहुँच पाओ
तब भी मत होना
तुम उदास,
मिल कर पथ पर
बिखरी हुई धूल में
बन जाना
तुम भी धूल।
धूल बन कर
तुम कहीं आनंदित
भी हो पाओगे –
अपने से आगे
जानेवालों का मार्ग

सुगम करने में,
बन कर धूल,
तुम सफल हो जाओगे

3

इस पथ पर
चलते चलते,
मिलेंगे तुम्हें अनेक
खाकर ठोकर गिरनेवाले।
जागेगी करूणा
तुम्हारे ह्रदय में
उन्हें देख,
जिस का जागना भी
होगा स्वाभाविक।
पर सावधान!
सहारा देने उन्हें
रूक मत जाना।
यदि तुम रूके, तो
सहारा देने ठहरे, तो
जान लो,
कि थाम लेंगे तुम्हें
ठोकर खाये हुये इतने,
कि सम्भव नहीं
हो पायेगा
आगे बढ़ना
पथ पर तुम्हारा,
रह जाओगे
तुम भी वहीं –
ठोकर खाकर
गिरे हुओं के बीच।
करूणा फंसा देती है
व्यक्ति को
सहारा देने के
बंधन में।
और यदि तुम
बंध गये
इस बंधन में,
तो फिर
चल नहीं पाओगे,
रह जाओगे वहीं –

सहारा देने के
भ्रम में।
देखो, जब तुम
ठोकर खाकर
गिरनेवालों को देखो,
तो तुम देना उन्हें
सहारा प्रेरणा का।
गिरे हुये को देख,
कह कर उस से,
कि उठो,
तुम अभी और
चल सकते हो,
बढ़ जाना आगे।
यही वह होगा सहारा,
जो उपजेगा
तुम्हारी करूणा से,
जिस से मिलेगा
ठोकर खाकर
गिरनेवालों को
प्रेरणा का सहारा।
तुम्हें चलता देख,
गिरा हुआ भी उठेगा,
लगा कर
अपनी शक्ति सारी,
और प्रारंभ कर देगा
फिर चलना
अपने थके हुये
बोझिल पाँवों से।
तुम तो बस
उस की प्रेरणा
बन जाना,
पथिक,
चलते जाना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

4

प्रारंभ किया था
तुम ने चलना,
कर के स्वीकार
चुनौती
जानने सामर्थ्य
स्वयं की,
जानने सीमाएँ
स्वयं की।
तुम चले और
चलते ही रहे
छू लेने को क्षितिज
स्वयं के सामर्थ्य का।
तुम चले
और चलते ही गये।
चलते चलते,
जी लिया
तुम ने अपना जीवन,
पर तुम नहीं रूके,
चलते ही रहे।
पहुँच जाओ जब
क्षितिज तक,
सफल हो जाओ जब
छू लेने में उसे,
तब देखना तुम,
कभी पीछे मुड़ कर –
तुम पाओगे,
पथिक,
कि दूसरे चलनेवाले,
देख कर तुम्हारे ही
छोड़े हुये पदचिन्हों को,
जिन्हें तुम छोड़ गये थे
पथ पर जीवन के,
बिखरी हुई
समय की रेत पर,
चलते हुये

पथ पर जीवन के,
प्रेरित हो रहे हैं
तुम्हीं से,
हाँ, तुम्हीं से,
देखते हुये
पदचिन्ह तुम्हारे ही,
कर रहे होंगे
कल्पना यही,
कि कैसा होगा वह,
जो छोड़ गया पदचिन्ह,
वही पदचिन्ह,
जिन से मिल रही है
प्रेरणा
चलनेवालों को,
कैसा होगा वह पथिक़?
अब सामने
तो नहीं है,
छू चुका होगा शायद
क्षितिज अपना,
पर याद
किया जा रहा है
उस से,
जो वह छोड़ गया पीछे।
ओ, पथिक,
जब तक छू न लो
क्षितिज अपना,
तब तक बस
चलते जाना,
बनने प्रेरणा
चलनेवालों की
तुम बस चलते जाना

5

पथ पर चलते हुये,
तुम मत डरना
और न घबराना,
कि आगे क्या होगा?
चल पाओगे तुम
कि नहीं?
खा जाओगे
ठोकर कहीं,
क्या पा सकोगे
क्षितिज को अपने?
तुम मत डरना
चलते हुए
पथ पर जीवन के।
थाम कर
उँगली जीवन की
और ले कर
प्रेरणा हृदय में,
तुम चलो,
तो चलते जाना।
चलते चलते,
तुम पाओगे,
कि जीवन पथ
वह पथ है,
जो स्वयं पर
चलनेवालों को,
जो चलते हैं
सहारे जीवन के,
ले कर प्रेरणा
हृदय में,
कभी लापरवाह
नहीं होने देता
उन्हें,
जो चले हैं छू लेने
क्षितिज को,
ले कर

साँसों की पूंजी
और पाथेय
जीवन का।
यह पथ है
जीवन का,
जिस पर चलनेवाला
जब खोने लगता है
पुरानी स्मृतियों में,
हटने लगती है
दृष्टि जब
क्षितिज से,
तब इस पथ की
एक ठोकर
कर देती है उसे
सतर्क,
जागरूक,
कि चलते रहना,
स्मृतियों में
खो मत जाना,
तुम्हें चलना है
बहुत आगे।
पथिक,
ले कर पाथेय
जीवन का,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

6
जीवन पथ पर
चलते हुये,
करूणा के बंधन से
बचते हुये,
पथ पर बिखरी
धूल से
प्रेरणा लेते हुये,
उसी धूल को
माथे पर
चढ़ाते हुये,
जब बढ़ोगे आगे
छू लेने को
क्षितिज अपना,
लिये पाथेय
जीवन का,
तुम्हारे ही हृदय की
प्रेरणा
जब दिखा रही होगी
मार्ग तुम्हें,
चल रहे होगे जब
अपनी ही धुन में,
दृष्टि होगी तुम्हारी
क्षितिज पर,
जिसे छू लेने
तुम कभी चले थे,
चल रहे हो
और चलते ही जाओगे
उसे छू लेने को,
पथ पर चलते हुये,
कहीं मिलेगा तुम्हें
वह, बैठा निश्चिंत
रास्ते के किनारे,
जो नहीं होगा
एक हिस्सा
पथ पर बिखरी धूल का,

और न खाई होगी
उस ने ठोकर,
न होगी उसे
क्षितिज को
छू लेने की बेचैनी।
ओ, पथिक,
मिले जब तुम्हें
कोई ऐसा
बैठा निश्चिंत,
तो कुछ क्षण
रूकना।
यह होगा वही,
जिस के पदचिन्हों से
ले कर प्रेरणा
चलते ही जा रहे हो।
आया होगा वह,
क्षितिज को छू कर,
शायद तुम्हीं को
कुछ बताने।
तुम रूकना,
बैठना पास उस के
और ले लेना
उस का अनुभव,
पर देखना,
लेना उसे,
अपने ह्रदय की
झोली में।
वही देगा
प्रेरणा तुम्हें
क्षितिज को
छू लेने की,
उस का अनुभव ही
पाथेय होगा तुम्हारा,
और शायद लक्ष्य भी
वही होगा।
तुम ह्रदय में

रख कर उसे,
आगे बढ़ जाना,
क्षितिज को
छू लेने से पहले
तुम मत रूकना,
बस चलते जाना

7

क्षितिज को
छू लेने की ललक
जब देगी प्रेरणा
तुम्हें चलने की,
और जब तुम पाओगे
अनंत तक
फैला हुआ पथ
सामने अपने,
तब कभी
चले न होने से
काँपेगा ह्रदय तुम्हारा,
कहेगा मन तुम्हारा
तुम्हीं सेः
“रूक जाओ,
कहाँ जाते हो?
कहाँ मिलेगी
संबंधों की यह
सुखद गरमाहट,
जिन्हें तुम
समझते हो अपना,
और वे दो,
जिन के माध्यम से
आये हो तुम
अस्तित्व में?
क्या तोड़ सकोगे
उन की निकटता का
सुखद सा बंधन?”
लगेगा तोड़ना
बड़ा कठिन।
जब कठिन बहुत लगे,
तब चलना,
सब कुछ छोड़ कर,
और देखना एक बार,
बस, एक बार
क्षितिज की ओर,

जहाँ दिखाई देगा
पथ तुम्हें
अनंत से मिलता हुआ,
ले लेना तुम प्रेरणा
इसी से
और बस चल पड़ना।
चलते चलते,
खींचेगी तुम्हें
नीड़ की
वह सुखद सी ऊष्मा,
पर तुम,
ले कर जीवन की पूंजी
और थोड़ा सा साहस
हृदय में,
कर लेना सामना
आँधियों का,
तूफानों का,
जो मिलते हैं पथ पर
धूल से भरे हुये।
तुम तो बस देख कर
क्षितिज की ओर,
चलते जाना,
मत रूकना,
बस चलते जाना

8

पथिक,
छोड़ कर
सुखद सी ऊष्मा
नीड़ की अपने,
छोड़ कर मोह
अपनों का,
जब चलोगे
उस अज्ञात से
पथ पर,
लिये काँपता हृदय
और स्वप्न
आँखों में,
तुम पाओगे
एक भीड़,
रोके हुये पथ को,
जो लगेगी पहले
अपनी सी।
उसे देख कर,
तुम संभल जाना,
समझ लेना पहले ही,
यह भीड़ है उन की,
जो डरते हैं
चलने से
और चलनेवालों से
रखते हैं ईर्ष्या भी।
वे रोकेंगे तुम्हें,
चाहेंगे तुम्हें बनाना
भीड़ का ही
एक अंग,
पर तुम
दृष्टि मत हटाना
क्षितिज से,
मत सुनना
भीड़ का प्रलाप।
वह डराएगी तुम्हें,

और जब
डरा नहीं पायेगी,
तब धिक्कारेगी भी,
पर तुम
मत रूकना
भीड़ के पास,
ले कर
काँपता ह्रदय अपना
और पूँजी
जीवन की,
बस देखते हुये
क्षितिज,
अनंत में कहीं
समाप्त होते से
लगते हुये,
उस पथ पर
तुम चलते जाना,
मत रूकना,
बस चलते जाना

9

पथिक,
रखना दृष्टि
क्षितिज पर,
चलते हुये
उस पथ पर,
जो ले जायेगा तुम्हें
अनंत तक,
लिये काँपता हृदय
अंतर में,
ले कर प्रेरणा
किसी के पदचिन्हों से,
क्षितिज को
छू पाने की
छटपटाहट के साथ
तुम जब छोड़ कर पीछे
उस भीड़ को
और अपने नीड़ की
सुखद सी ऊष्मा को,
बढ़ोगे जब तुम आगे,
तब पाओगे,
कि चलने से तुम्हारे
नहीं तड़पा कोई,
न भरी आँख
किसी की,
और जो चलना
नहीं चाहता है
इस पथ पर,
समझ लो,
कि उस के लिये
तुम नहीं रहे।
मत भूलना,
कि भीड़ की स्मृति
होती है बहुत कम।
जब चलनेवालों को
रोकने में सफल

नहीं हो पाती वह,
नहीं मिला पाती
स्वयं में,
तब छोड़ कर
उस की चिंता,
फिर सिमट जाती है
अपने में,
करती है इंतजार
किसी और का,
जो चलेगा कभी,
तुम्हारे ही पदचिन्हों से
ले कर प्रेरणा।
तुम तो बस
चलते जाना,
मत रूकना,
चलते जाना।
चलते चलते,
पहुँचोगे क्षितिज तक,
और जब लगेगा तुम्हें,
कि बस अब
छुआ तुम ने
क्षितिज को,
तब पाओगे तुम
स्वयं को ही वहाँ,
स्वागत भी करोगे स्वयं
स्वयं का ही वहाँ।
पर जब तक ऐसा हो,
तब तक पथिक,
मत रूकना,
ले कर स्वप्न आँखों में,
बस चलते जाना

10

चलते चलते
पथ पर,
जब थकते होंगे
तुम्हारे पाँव,
लगेगा तब,
अब चलना है
बहुत कठिन,
और चाहोगे,
कि क्षण भर को
रूक जाऊँ,
यहाँ होता कोई,
जो देता मुझे सहारा
थोड़ा सा,
बस थोड़ा सा,
पर, पथिक,
सावधान!
मत रूकना,
मत ढूँढना सहारा।
यदि ढूँढा तुम ने,
तो चल नहीं पाओगे,
गिर जाओगे वहीं,
बन जाओगे
तुम भी धूल,
यदि ठहर गये
ढूँढते हुये सहारा।
पथिक,
जब लगे तुम्हें,
कि कोई दे सहारा,
तुम मत देखना
किसी की ओर,
बस देखना
क्षितिज को
और देना स्वयं
स्वयं को ही सहारा
और चलते जाना।

मत भूलना,
रखना तुम याद,
कि तुम से बढ़ कर
नहीं है कोई और,
जो दे सके
तुम्हें सहारा।
जब थकते हों
तुम्हारे पाँव,
तुम दे देना खुद ही
खुद को सहारा,
और ले कर उसे,
तुम चलते जाना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

11

देख रहे हो
इस जीवन पथ को,
जिस पर चलना है
तुम्हें,
ले कर जीवन का पाथेय,
छोड़ कर अपना
और वही अपनी सी
लगनेवाली भीड़।
ले कर थोड़ा सा
साहस हृदय में,
लिये क्षितिज को
छू लेने का स्वप्न
आँखों में,
तुम चलना,
पर देखना,
चलना इस पर
संभल कर।
यह पथ है
फिसलन भरा,
आशाओं और
निराशाओं की
कीचड़ भरा।
तुम पाओगे
इस पथ पर
अंधे मोड़ भी,
इन से बचना।
ओ, पथिक,
मत जाना तुम भटक
इन अंधी गलियों में।
सीमा को अपनी
छू लेने
तुम चलते जाना,
देते हुये
स्वयं को सहारा,
ले कर

प्रेरणा की पूँजी।
पथिक,
उस पथ पर,
तुम बस चलते जाना।
यदि गिरे
इस पथ पर कहीं,
तो रखना तुम याद,
नहीं देगा कोई सहारा –
न अपने,
न अपनी सी
लगनेवाली भीड़।
गिर कर,
उन का बस
मनोरंजन ही
कर पाओगे,
सहारा तो
तुम्हें ही
देना होगा
स्वयं को।
गिर भी जाओ, तो
चोटिल भी हो जाओ, तो
देना तुम सांत्वना
स्वयं को –
गिरता वही है,
जो चलता है
छू लेने को क्षितिज,
गिर कर,
हो जाता है वह
और भी परिपक्व,
भर जाता है वह
और भी दृढ़ता से
पथ पर चलते
चले जाने को
छू लेने सीमा को
स्वयं की।
पथिक!

रखना तुम यह याद
और चल देना आगे,
मत रूकना,
बस चलते जाना

12

जा रहे हो
छू लेने को क्षितिज,
सोच कर
कि जान लोगे स्वयं को,
जान कर सीमाएँ स्वयं की,
असीमित भी
कभी हो जाओगे,
जब पा जाओ स्वयं को,
छू कर क्षितिज,
तब देखना मुड़ कर
कभी हमारी भी ओर।
हम चल नहीं पाये
इस दुर्गम पथ पर,
बन कर रह गये धूल कहीं,
समा लिया हमें
अपनी सी लगनेवाली
उसी भीड़ ने,
जो तुम्हें नहीं रोक पाई,
करना तुम याद हमें,
उन्हें, जो चल नहीं पाये,
सिमट गये कहीं
बनाने नीड़ अपना
जीवन की
किसी अन्धी गली में।
रखना तुम याद,
चलने से तुम्हारे
कहीं तड़पे हैं हम,
पर आनंदित भी हुये हैं,
दे कर अपना वर्तमान
तुम्हारे भविष्य को,
हम ही तो हैं,
जिन के वर्तमान पर
खड़ा है भविष्य तुम्हारा।
यदि है
थोड़ी सी भी संवेदना

तुम में हमारे लिये,
तो पथिक,
बीच में
क्षितिज को
छू लेने से पहले
तुम कहीं रूक मत जाना,
बस चलते जाना,
पथिक,
बस चलते जाना

13

पथिक,
जब होने लगो
निराश
और हो जाओ
कभी उदास,
चलते चलते
एकाकी
पथ पर जीवन के,
नहीं मिले प्रेरणा
जब तुम्हें,
मत होना तुम उदास,
मान लेना
पथ को ही
रंगमंच तुम,
समझ लेना –
तुम हो मात्र
एक अभिनेता,
करते हुए अभिनय
बस चलने का।
चलते रहना
ले कर कल्पना
पहुँचने की वहाँ,
जहाँ पहुँचने को
चलना शुरू किया था
तुम ने,
पथिक,
चलते जाना
थाम कर
साँसों की डोर।
हो जाये जब
पाँव तुम्हारे बोझिल,
आगे जाना और
आगे चलना
लगे असम्भव सा,
तब तुम

ले लेना उधार
अपनी कल्पना से
कल्पना के ही
दो पँख
और उड़ जाना
उन्हीं के सहारे
क्षितिज की ओर।
जहाँ पाँव नहीं
ले जा पायेंगे,
पहुँचा देंगे यही पँख
तुम्हें वहाँ,
जहाँ पहुँच कर
तुम पाओगे –
कल्पना ही है
यथार्थ,
यथार्थ,
जो लगता था
पहले तुम्हें
कल्पना सा।
जान पाओगे यह तुम,
पहुँच कर वहाँ,
जहाँ के लिये,
पथिक,
तुम चल रहे हो।
जहाँ भी कहीं
थक जायें
पाँव तुम्हारे,
ले कर पँख
कल्पना के,
तुम उड़ जाना आगे,
मत रूकना,
बस चलते जाना

14

ओ पथिक,
चलते चलते
जब जीवन की तुम्हारे
सांझ होने लगे,
हृदय में लक्ष्य को
पा लेने की व्याकुलता
बढ़ने लगे,
और थकते हों
तुम्हारे पाँव,
तुम मत घबराना,
देख कर
घिरती हुई रात,
कि तुम
पहुँच नहीं पाओगे।
शायद लगे तुम्हें,
कि तुम कुछ
कर नहीं पाये,
नहीं मिला कहीं सुख
तुम्हें थोड़ा सा।
हो जाते यदि
भीड़ का हिस्सा,
तो कैसा होता?
मिलता कहीं कोई,
जो तुम्हारा हृदय
बाँट लेता,
पीड़ाएँ दूर कर,
तुम्हारे जलते हृदय पर
मरहम भावों की
लगा देता?
पथिक,
सोच कर यह
जीवन की सांझ में,
मत होना
तुम निराश
और न होना

तुम उदास,
रखना याद,
कि तुम चले हो,
तो चले रहे हो।
मत करना
तुम परवाह,
हो जाये
जीवन की सांझ
पथ पर ही यदि,
कर लेना विश्राम
क्षण भर को,
मूंद लेना आँखें
क्षण भर को,
फिर
जब होगा सवेरा,
चमकेगा सूर्य
जीवन का फिर से,
ओ पथिक,
तुम उठना,
ले कर नया पाथेय
जीवन का,
रख कर दृष्टि
क्षितिज पर,
ले कर स्वप्न आँखों में
उसे छू लेने का,
तुम फिर चल देना,
चलते जाना
अनंत के पथ पर,
मत रूकना,
बस चलते जाना

15

चलते हुये
पथ पर जीवन के,
मिलेंगे तुम्हें
अनेक
पैदा करनेवाले
भ्रम चलने का,
करते हुये प्रयास
बोलने को
तुम्हारी ही भाषा।
ओ पथिक,
तुम रहना
सावधान!
मत होना तुम
भ्रमित उन से,
जो करते हैं
बात चलने की,
पर खड़े हैं वहीं –
किसी अंधी गली के
मोड़ पर।
वे बुलाएंगे तुम्हें,
बोल कर
तुम्हारी ही भाषा,
पर तुम
मत सुनना
उन का प्रलाप,
देखना
उन के पाँवों को,
देखना,
क्या पथ के शूल
चुभे हैं वहाँ?
श्रम के छाले क्या
दिखते हैं वहाँ?
यदि नहीं,
तो पथिक,
सुन कर

अपनी सी लगनेवाली
उन की बात,
तुम मुस्कुराना
और चुपचाप
बढ़ जाना आगे,
क्योंकि जो चलता है,
उस का
क्लांत हो जाना,
पाँवों का उस के
घायल हो जाना
निश्चित है।
तुम देखना
और बढ़ जाना आगे,
रूक मत जाना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

16

चलने से पहले
तुम घबराओगे,
काँपेगा ह्रदय तुम्हारा,
पर यह स्वाभाविक ही है –
डरते हैं सभी
अज्ञात से,
सोचते हैं,
कैसे जानेंगे उसे,
जो वे नहीं जानते।
पर लेकर स्वप्न आँखों में
जानने का उसे,
जो तुम जानते तो नहीं,
पर जानना चाहते हो एक दिन,
तुम बस चल पड़ना
और चलते ही जाना।
लगेगा कठिन प्रारम्भ
और पहला कदम उठाना,
पर तुम कर के साहस,
ले कर प्रेरणा
अपने ही स्वप्न से,
उठा लेना पहला कदम।
तुम पाओगे
प्रारम्भ करने के बाद,
नहीं है कुछ भी कठिन।
एक के बाद एक
पाँव रखते चले जाना,
रख कर स्वप्न सामने
चलना,
चलना उस के पीछे
छू लेने को क्षितिज,
जीवन पथ पर
अनंत तक
तुम चलते ही जाना।
चलते चलते,
तुम देखना,

वह क्षण भी आयेगा,
जब चलना सहज होगा
और रूकना
कठिन हो जायेगा।
आ जाये जब यह क्षण,
तब तुम देना धन्यवाद
स्वयं को ही,
क्योंकि तुम ही तो हो,
जो चल रहे हो
पहुँचने को वहाँ,
वहीं,
जहाँ का स्वप्न
लिये आँखों में
तुम कभी चले थे
और चल रहे हो।
लेकिन यह हो जब तक,
पथिक,
तब तक तुम
कहीं रूक मत जाना,
थाम कर आशा का हाथ,
तुम तो चलते जाना
बस चलते जाना

17

जीवन पथ पर
जीवन की सांझ
जब होने लगे,
मृत्यु के अंधेरे देख कर,
तुम होने लगो भयभीत,
तब होगे तुम
कुछ परेशान
निश्चित ही,
घबराओगे भी,
पर मत छोड़ना
साहस का साथ।
ले कर प्रेरणा
स्वयं से ही
और लिये
स्वप्न आँखों में
पहुँचने का वहाँ,
जहाँ पहुँचने को
तुम चले हो,
चलते जाना,
तुम मत डरना
अंधेरों से।
याद करना,
कभी तुम ने सुना होगा,
अंधेरा जब छाता है,
तभी निकलता है
चन्द्रमा भी।
ले कर
चांदनी का सहारा,
हो जाने पर
जीवन की सांझ,
घिर आये हों
मृत्यु के अंधेरे जब,
तुम चलते जाना,
मत रूकना।
यह चाँद ही

दिखायेगा तुम्हें राह
जीवन के उस पथ पर,
जिस पर तुम चले हो,
और देगा तुम्हें
सहारा यही
नया सवेरा होने तक
जीवन का।
यही प्रतीक्षा
लिये अंतर में,
और स्वप्न आँखों में
पहुचने का वहाँ,
तुम चलते जाना,
पथिक,
मत रूकना
और न होना उदास,
तुम चलते जाना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

18

तुम ने चलना
शुरू किया था,
ले कर स्वप्न आँखों में
छू लेने का क्षितिज,
रोका था तुम्हें
बहुतों ने,
जो लगते थे तुम्हें
कभी अपने से,
मिली थी भीड़ भी तुम्हें,
तुम्हारी जैसी ही
बात बोलती हुई,
रोकने तुम्हें,
पर तुम नहीं रूके।
ले कर सहारा स्वयं का
और कभी
कल्पना के पंखों का,
तुम चले,
छोड़ते हुये पदचिन्ह
कहीं समय की धारा में,
लिये काँपता हृदय
और जीवन की पूँजी,
जीवन पथ पर
तुम चले।
क्या नहीं लगता तुम्हें
कि चलना प्रारंभ कर देना
कितना महत्वपूर्ण था!
चलते हुये यदि
न समझ पाओ फिर भी,
जब पहुँच जाओ
कभी क्षितिज तक,
हो जाओ सफल
उसे छू लेने में,
तब तुम देखना मुड़ कर,
तभी तुम देख पाओगे
हो कर निश्चिंत,

तुम्हें तब भय
ठोकर खाने का
नहीं होगा,
पा चुके होगे तुम
जब अपना क्षितिज,
तब देखना मुड़ कर,
तुम पाओगे,
हज़ारों चल रहे हैं
ले कर प्रेरणा
तुम्हारे ही पदचिन्हों से,
तब समझ पाओगे,
जो चलता है अकेला,
वही दे पाता है
प्रेरणा औरों को
और आनंदित भी
हो जाता है कहीं
बन कर प्रेरणा।
पर जब तक छू न लो
अपना क्षितिज
और बनो प्रेरणा,
तब तक, पथिक,
कहीं रूक मत जाना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

19

जीवन पथ पर,
ले कर स्वप्न
छू लेने का क्षितिज,
रख कर दृष्टि
क्षितिज पर,
ले कर सहारा
कल्पना का,
तुम चलना।
चलते हुये
रखना यह याद तुम,
कि देख रहे हो
अनंत की ओर,
चल रहे हो
जीवन के उस पथ पर,
जो पथरीला भी है
और फिसलन भरा भी।
देखना,
कहीं दृष्टि तुम्हारी
खो न जाय
अनंत में ही।
वहाँ तो
तुम्हें पहुँचना है
और चलना है
इसी दुर्गम पथ पर,
जहाँ थोड़ा भी चूके,
तो गिर जाओगे
खा कर ठोकर,
निगल जायेगा तुम्हें
दलदल जीवन का,
गिर कर,
घायल भी हो सकते हो।
रखना तुम याद,
पथिक,
इस पथ को,
जिस पर तुम चले हो,

बन कर पथिक,
ले कर पाथेय
जीवन का,
छू लेने को
अपना क्षितिज।
जानने परिधी
स्वयं की
तुम चल रहे हो।
पथिक,
रखना तुम याद,
दृष्टि हो
अनंत की ओर,
पर देखना
पथ को भी,
चलना सावधानी से।
भले ही हो जाये गति
तुम्हारी कुछ धीमी,
पर गिर जाने से
तो धीरे चलना
और चलते चले जाना
कहीं अच्छा है।
पथिक,
रहना तुम
सावधान!
छू लेने को
क्षितिज,
जानने सीमा
स्वयं की
तुम चलते जाना,
मत रूकना,
बस चलते जाना

20

तुम चले थे
इस दुर्गम पथ पर
जीवन के,
ले कर
काँपता ह्रदय
और प्रेरणा के घाव
अंतर में,
जो रिसेंगे तब तक,
जब तक तुम
पहुँच नहीं जाओगे
वहाँ,
जहाँ पहुँचने के लिये
किया था प्रारंभ
तुम ने चलने का।
चलते चलते,
थकेंगे तुम्हारे पाँव,
घायल भी हो जाएंगे
पथ के शूलों से,
बस मिलेगी
कुछ राहत तुम्हें
धूल से
बिखरी हुई पथ पर।
तुम लिये हुये
छालों भरे
बोझिल पाँव
चलते ही जाना,
थक जाने को ही
बना कर सहारा
स्वयं का,
स्वयं ही
तुम बस चलना।
जब होगी इति
चलने की तुम्हारी,
वहाँ पहुँच कर,
वहीं,

उस क्षितिज पर,
जिसे छू लेने के लिए ही
तो तुम चले थे,
तब बैठना
और देखना
अपने उन धूल भरे
चोटिल पाँवों को,
जिन पर पड़े हैं छाले
चलते रहने से,
उन्हें सहलाना।
यही होगा
तुम्हारा पुरस्कार
स्वयं ही
स्वयं के पाँवों को।
वे ही तो थे
तुम्हारे पथ के साथी,
जो सहते हुये
सब कुछ
तुम्हें ले आये,
जीवन पथ को
पार कर के,
यहाँ तक,
जहाँ पहुचने के लिये
तुम चले थे कभी।
पथिक,
रखना तुम याद
उन्हें,
धो लेना
अपने आँसुओं से,
जो बहेंगे आनंद से,
पहुँच कर वहाँ,
जहाँ पहुँचने के लिये
तुम कभी चले थे

21

तुम जब चल रहे होगे,
देखते हुए अनंत को,
अनंत की ही ओर,
जला कर जीवन दीप,
जिस के सहारे
करना होगा सामना
तुम्हें तूफानों से,
उन भयानक
काली घटाओं से,
जो रात होने से पहले ही
तुम्हारे पथ को रोक कर
भरना चाहेंगी अंधकार से
तुम्हारे दीपक की लौ।
तुम्हें लगेगा
कि बस बुझने ही वाली है,
पर तुम मत डरना,
भर लेना
अपना जीवन दीप उस से,
जो रिसा है
तुम्हारे ही ह्रदय से
खाकर प्रेरणा के घाव।
भरते ही उस से दीपक,
फैलेगा उजियाला
आशा का,
स्वप्नों का
और कर देगा वह दूर
पथ की काली आंधी को,
जो रोकती होगी
तुम्हें चलने से।
ले कर वही दीप
ह्रदय में
ले कर आशा का
उजियाला,
पथिक,
तुम चलना,

आंधी हो या कुछ और,
तुम मत रूकना,
तुम मत डरना –
नहीं बुझ पायेगा
दीप तुम्हारा,
जो भरा है
रिसाव से प्रेरणा के
और दे रहा है
आशा का उजियाला।
लिये उसे
ह्रदय में अपने
ओ पथिक,
तुम मत रूकना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

22

पथ पर चलते चलते
मिलेगा दुःख,
देगा वही
साथ भी तुम्हारा,
होगा यही
वह साथी,
जिसे तुम
पहचान पाओगे,
लक्ष्य पर पहुँचकर।
जान पाओगे,
पथिक,
क्षितिज को
छू लेने के बाद
कि यह तो
सुख ही था,
जिसे तुम
चलने से होकर क्लांत
समझ रहे थे
कुछ और।
वही चलेगा
साथ तुम्हारे,
पहन कर दुख के वस्त्र,
कर लेना स्वीकार
तुम उसे।
पी लेना
श्रम के प्याले में
उसे,
जिसे तुम विष
समझोगे पहले,
पर परिणाम में
अमृत भी
वही होगा।
जान पाओगे यह तब,
जब तुम
पहुँच जाओगे वहाँ,

जहाँ पहुँचने को
तुम ने किया था प्रारम्भ
चलने का कभी।
करना तुम याद
परिणाम की।
पथिक,
मत रूकना,
दुःख से मत घबराना,
यही तो होगा
वह अमृत,
जो धो कर रख देगा
तुम्हारा सारा कलुष,
जो चढ़ा,
पथ पर चलते हुये।
पर जब तक यह हो,
पथिक,
बीच में कहीं
रूक मत जाना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

23

तुम जब देखो
कि चलते चलते,
सांझ हो रही है,
और घिर रही है
अमावस की रात,
ले कर मृत्यु का अंधेरा,
काँपोगे तुम,
देख कर उसे
कि अब क्या होगा,
कैसे चल पाऊँगा?
देख पाऊँगा क्या
अब क्षितिज को,
लक्ष्य को अपने,
जिस के लिये
ले कर स्वप्न हृदय में,
थाम कर सांसों की डोर,
मैं चला था,
अब क्या होगा?
पथिक,
यदि ऐसा हो
कहीं मार्ग में तुम्हारे,
तो मत डरना,
लगेगा तुम्हें
कि क्या होगा,
पर मत घबराना,
दुःखी भी मत होना,
उस अंधेरी रात में
स्वयं के अर्जित अनुभव से
करना प्रकाशित स्वयं को।
चमकता है जैसे जुगनूँ
स्वयं अपने ही प्रकाश से,
वैसे ही तुम स्वयं जलना
और कर लेना प्रकाशित
अपने पथ को,
जिस पर तुम्हें चलना है,

चल रहे हो अभी तक।
मृत्यु के अंधेरों से
तुम मत डरना,
कर के प्रज्वलित
अनुभव से
अपनी चेतना,
तुम स्वयं
प्रकाशित हो जाना,
पथिक,
तुम बढ़ते ही रहना,
क्षितिज को
छू लेने से पहले
मत रूकना,
बस चलते जाना

24

जीवन पथ पर
चलते चलते,
बनने लगे आशा
जब तुम्हारी निराशा
और थक कर चूर हुए,
सोचोगे तुम
कि बस अब
और नहीं चल पाऊँगा,
तब तुम रूक मत जाना,
देखना, आशा का दीप
कहीं बुझने न पाए।
कोई नहीं देगा
थोड़ी भी सहायता
फिर उसे जलाने में,
तुम भी फँसकर
निराशा के भंवर में
पता नहीं,
जला पाओगे इसे
फिर से कि नहीं।
रहना तुम सचेत,
करना रक्षा इस दीपक की
आशा के।
ठान लोगे जब तुम
चलते ही रहना,
तब सुन पाओगे
अपने हृदय की
थकी क्षीण सी पुकार
कि मत रूकना,
यह वह पथ है,
जिस पर करना होता है
खून का पानी
और छोड़ देना पड़ता है
हर नकारात्मक सोच।
छोड़ पाओगे
निराशा यदि तुम,

तो आशा जागेगी,
होगी फिर वह
नव यौवना
और कर लेगी
वरण तुम्हारा।
लगा कर उसे
तुम अपने हृदय से,
पथिक,
ले कर उस का सहारा
और देते हुये
उसे सहारा स्वयं का,
तुम बढ़ते चले जाना,
मत रूकना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

25

चलते चलते,
शरीर तुम्हारा
जब हो जाए
थक कर चूर,
एक एक कदम पर लगे
कि कहीं यही तो
आखिरी नहीं,
पथिक!
तुम मत घबराना
और न होना निराश तुम,
छोड़ कर निराशा का साथ,
थामे रहना आशा को।
वही तुम्हें ले जाएगी,
वही आशा,
जो लेती है जन्म
तुम्हारे उस स्वप्न से,
जो चलने से पहले
तुम ने देखा था,
हाँ, वही –
क्षितिज को छू लेने का,
दर्शन कर लेने का
परिधि का स्वयं की।
तुम मत रूकना,
चलते जाना।
शरीर भी यदि तुम्हारा
गिर जाए कभी
चलते चलते,
और आग चिता की
कर दे जला कर राख उसे,
तब भी तुम मत डरना,
हाँ, मत घबराना,
तब तुम्हारी स्वप्निल आशा ही,
बन कर पवन,
तुम्हारी राख
उड़ाएगी

और ले जाएगी
क्षितिज तक,
बिखेर देगी उसे वहीं,
जहाँ पहुँचने को
तुम कभी चले थे।
तुम मत डरना
और न होना
निराश कभी,
पथिक!
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

26

जीवन पथ पर
चलते चलते,
पथिक,
कभी तुम हो जाओगे उदास,
कर के उस की याद,
जिसे तुम छोड़ना
तो नहीं चाहते थे,
पर चलना
महत्वपूर्ण अधिक था
तुम्हारे लिये,
तभी तो तुम चले,
ले कर स्वप्नों का सहारा,
अपनी परिधि को
जानने तुम चले।
हुआ होगा
वह भी उदास,
जो रह गया पीछे,
बाँधना चाहता था
वह तुम्हें
अपनी सीमाओं में,
पर तुम नहीं बंधे,
क्योंकि जब चलता है कोई,
पकड़ कर आशा का साथ,
छू लेने को क्षितिज,
वह नहीं रूकता,
नहीं बंधता कभी
किसी के बंधन में
और सीमित भी
नहीं होता किसी की
आरोपति सीमाओं में,
वह तो बस चल देता है,
स्वयं ही स्वयं को लेकर,
जानने अज्ञात को।
पथिक,
तुम मत होना उदास

उस की याद में,
जो रह गया पीछे,
यह उदासी
कर देगी बोझिल
तुम्हारे पाँवों को,
देखो, कहीं रूक न जाना
वापस न चले जाना।
रखना तुम यह याद,
जो हो गया उदास
तुम्हारे चलने से
और रह गया कहीं पीछे
अपनी सीमाओं में सीमित,
उस के स्वप्न नहीं थे,
चुरा रहा था दृष्टि
वह क्षितिज से,
न थी उस में ललक
अज्ञात को जान लेने की,
तभी तो रह गया पीछे,
नहीं चला साथ तुम्हारे,
हो कर रह गया असफल
रोकने में तुम्हें भी।
तुम मत होना उदास
उस की याद में,
वह होता तुम्हारा साथी,
तो होता वह भी
तुम्हारे साथ।
पथिक,
मत होना तुम उदास,
सोचना और
बढ़ जाना आगे,
मत रूकना,
बस चलते जाना

27

क्षितिज को
छू लेने का स्वप्न लिये
और जानने परिधि स्वयं की
पथिक,
जब तुम चलना
प्रारंभ करोगे और
जब पार कर जाओगे
चलना शुरू करते ही
आनेवाली बाधाओं को,
तब तुम्हें दिखाई देंगे
कुछ पदचिन्ह,
जो जा रहे होंगे
दूर, अनंत तक फैले
इस पथ पर जीवन के।
देख कर उन्हें,
तुम हो जाओगे चकित,
सोच कर कि कैसे होंगे वे,
जो चले गये पहले तुम से
छू लेने को क्षितिज?
क्या पहुँच पाऐ होंगे?
देंगे वे पदचिन्ह
प्रेरणा तुम्हें,
थाम लेना तुम कस कर
वह किरण प्रेरणा की
और चलते रहना,
रख कर दृष्टि
स्वयं की वहीं,
जहाँ मिलते होंगे
पृथवी और आकाश
और देखते हुए
वे पदचिन्ह,
जो हो रहे होंगे धूमिल,
तुम बस बढ़ते रहना।
पहुँचोगे जब तुम
उस बिन्दु पर,

जहाँ मिलते हैं गले
जीवन और मृत्यु,
वहीं पा जाओगे
अपना क्षितिज
और परिधि का दर्शन
भी हो जाएगा।
देखोगे वहाँ उन्हें,
जो तुम से पहले चले थे,
उन्हीं के पदचिन्हों से
ले कर प्रेरणा,
तुम भी पहुँचे हो वहाँ,
जहाँ मिलते हैं
जीवन और मृत्यु
और हो जाते हैं एक,
तुम पाओगे स्वयं को वहाँ,
देख कर पदचिन्ह स्वयं के,
आल्हादित भी हो जाओगे।
लेकिन तब तक थाम कर
प्रेरणा की डोर,
पथिक,
चलते रहना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

28

जन्म से
मृत्यु तक की यात्रा –
यही पथ है
जीवन का,
जिस पर तुम्हें
चलना है,
ओ पथिक,
ले कर
श्वासों का सहारा
और स्वप्न
जान लेने का
मृत्यु को,
यही तो है
वह कल्पना,
जो प्रेरित करती है
तुम्हें चलने को।
पथिक,
तुम चलो,
तो चलते जाना!
यह पथ है,
जिस पर
जाने अनजाने
चलते हैं सभी,
लेकिन डरते हैं
परिणाम से,
पर तुम मत घबराना!
जिसे समझते हैं
अंत सभी,
पाओगे तुम
प्रारम्भ वहीं।
मत रूकना,
मत खोना
जीवन पथ की
संकरी गलियों में।
मिलेगा कहीं

तुम्हें पथ भी
ऊँचा–नीचा बहुत,
पर तुम मत रूकना,
तुम्हारा चलना ही
कर देगा समतल उसे।
पथिक,
ले कर
साँसों की डोर,
और स्वयं की परिधि
देख लेने का स्वप्न
आँखों में,
जला कर दीप
हृदय में
आशा का,
तुम बढ़ते ही जाना,
बस चलते जाना

29

चलते चलते
पथ पर जीवन के,
मिलेंगे तुम्हें अनेक
राह को दुर्गम
बनानेवाले काँटे,
और बिखरे होंगे
पत्थर भी।
तुम जब चलोगे
पथ पर जीवन के,
मिलेगा तुम्हें
यही सब।
चलते चलते,
रखते हुए दृष्टि
क्षितिज पर,
थाम कर आशा की डोर,
उस स्वप्न के सहारे,
जो देखा था तुम ने,
और तुम चल रहे हो
करने साकार उसी को,
तुम्हें मिलेंगी
बाधाएँ अनेक,
इन से बचकर भी
तुम निकल सकते हो।
काँटों को, पत्थरों को
छोडकर वैसे ही,
तुम जा सकते हो अभी,
पर कुछ देर को थमना
और सोचनाः
जो देखकर
पदचिन्ह तुम्हारे,
तुम जब नहीं होगे,
फिर भी लेंगे प्रेरणा
तुम्हारे चलने से,
उन्हें करना तुम याद।
मत भूलना तुम उन्हें,

जो आएँगे कभी
पीछे तुम्हारे।
तुम रूकना,
जहाँ लगे
राह पर सबसे कठिन
बाधा तुम्हें,
तुम रूकना
और लगा देना
शक्ति अपनी
चलने के अतिरिक्त
थोड़ी सी हटाने उन्हें,
जिन से तुम तो
बच पाओगे,
लेकिन, शायद,
तुम्हारे पीछे आनेवाले,
तुम्हारे पदचिन्हों को देखनेवाले
कहीं उन पदचिन्हों पर
ध्यान न दे पाएँ
और पत्थरों से
चोटिल हो जाएँ,
और लग जाएँ काँटे –
उन्हें तुम हटा देना।
चलते चलते
तुम हटाते जाना
बाधायें राह की।
जीवन पथ पर
चलते चलते,
तुम अपने पीछे
आनेवालों का मार्ग
सुगम कर देना।
पथिक,
तुम चलते जाना,
मत रूकना,
बस चलते जाना,
हटा कर पथ की बाधाएँ
तुम चलते जाना

30

चलोगे जब तुम
पथ पर जीवन के,
जानने जीवन को ही,
ले कर स्वप्न
और जिज्ञासा
हृदय में,
तब पथिक,
तुम्हें मिलेंगे कुछ लोग,
जो लगेंगे तुम्हें अलग
उस भीड़ से,
जो देगी उपदेश
तुम्हें न चलने का,
देगी चुनौती भी
तुम्हें न चलने की,
दिलाएगी याद
तुम्हें न चलने के
कर्तव्य की,
कर्तव्य, जो जन्म लेता है
न चल पाने की कुण्ठा से
और कर देती है भीड़
उसी कुण्ठा को
महिमामण्डित,
दे कर नाम उसे
कर्तव्य का।
हाँ, तो वे लोग
मिलेंगे तुम्हें,
जो लगेंगे अलग
इस भीड़ से,
रहना तुम सावधान!
यही तो होंगे वे,
जो देंगे तुम्हें
उपदेश मुक्ति का ,
पा लेने को अव्यक्त का,
खोले होंगे कहीं दुकान,
दे कर उसे नाम

धर्म का।
तुम बचना,
रहना इन से दूर,
होंगे ये भीड़ से भी
अधिक खूंखार,
और भीड़ भी तो होगी
इन्हीं की वजह से।
तुम मत होना प्रभावित
उन की मुक्ति की बातों से,
जो कहेंगे तुम से
कि पा लेने को लक्ष्य
चलना नहीं है आवश्यक।
पूजते होंगे वे
किसी के पदचिन्ह,
मान कर मसीहा उसे।
तुम देखना
उन की आँखों में,
तुम्हें दिखेगी
बस एक छटपटाहट,
छुपी होगी एक आह
कहीं उन के अंतर में,
तुम सुनना उन की बात,
सुन कर बढ़ जाना आगे।
यदि वे चल सके होते
पाने को जीवन का लक्ष्य,
तो तुम्हें नहीं मिलते वे
भीड़ के बीच,
बढ़ाते हुये और भीड़ को,
तुम पाते मात्र कुछ पदचिन्ह।
तुम देख कर उन्हें,
कह कर उन से
कि कब तक पूजें
पदचिन्ह किसी के,
चलो चलें हम भी
छू लेने क्षितिज को
यह कह कर,

पथिक,
बढ़ जाना आगे
मत रूकना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

31

जीवन में
खाते हुये थपेड़े
और पीते हुये आँसू,
कुछ पा लेने की
कल्पना में
बैठे हुए तुम।
पथिक, सोचना,
दूर कर कुछ देर
छटपटाहट अपनी,
तुम सोचना,
क्या रूके हुए,
एक जगह बैठे हुए,
सिमटे हुए
अपने ही बनाए घेरे में,
क्या तुम कुछ पा साकोगे?
कहीं पहुँच पाओगे?
तुम सोचना,
क्या स्वीकार कर सकोगे,
सह सकोगे
इस नग्न सत्य को,
कि नहीं चलोगे,
तो पहुँच नहीं पाओगे,
रह जाओगे तुम भी,
बन कर पथ की धूल
और बन कर हिस्सा
उसी भीड़ का,
जिसे देख रहे हो तुम,
रोकते हुए रास्ता
चलने वालों का?
क्या आनंदित हो पाओगे?
सोचना
और देखना
स्वप्न वहाँ का,
जहाँ मिलते होंगे कहीं
जीवन और मृत्यु,

तुम करना प्रयास
अंतर में तड़प लाने का
उसी क्षितिज को
छू लेने का।
तुम उठना,
पथिक,
और बस चल देना
ले कर सहारा स्वप्न का,
जला कर दीप
हृदय में आशा का
छू लेने क्षितिज को,
तुम कर देना प्रारम्भ
चल देने का।
जहाँ से भी
तुम चलोगे,
प्रारम्भ भी होगा
वहीं से।
पर देखना,
कुछ दूर चल कर
तुम पाओगे,
कि चले
तो तुम बहुत
पहले से थे,
पर जान
अभी पाये हो,
कि बैठे नहीं थे,
चल रहे थे।
जान लोगे जब यह,
तब तुम देखना सामने
और ले कर अंतर में
उत्साह चलने का,
चलते जाना,
मत रूकना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

32

पथ पर चलते हुये
जीवन के,
चले हो जिस पर तुम,
पथिक,
यदि न मिले तुम्हें
पथ पर कहीं
कोई पदचिन्ह,
जिन से ले पाते तुम
प्रेरणा चलने की,
तुम चिंतित मत होना।
यदि न पाओ
पथ पर कहीं
समय की धूल,
जिस पर बन सकते हों
पदचिन्ह,
तुम देखना,
जहाँ तुम खड़े हो
मुड़ कर पीछे,
फिर देखना
एक बार सामने,
तुम पाओगे
क्षितिज को,
करेगा आकर्षित तुम्हें
क्षितिज ही।
जागे जब
आकर्षण ह्रदय में,
तब देखना तुम स्वप्न
छू लेने का क्षितिज को,
सोचना,
पहुँच कर वहाँ,
कर पाओगे दर्शन
परिधि का स्वयं की
और बस चल देना,
मत करना परवाह तुम
कि नहीं है

किसी के पदचिन्ह
देने तुम्हें प्रेरणा,
तुम बन कर स्वयं प्रेरणा,
ले कर स्वप्नों का सहारा,
बस चल देना।
जब तुम बढ़ जाओगे आगे
और करोगे परख
स्वयं की,
चलते चलते
छोड़ कर पदचिन्ह
स्वयं के,
जब तुम गुजर जाओगे
वहाँ से,
वही पथ
कहा जाएगा कभी
पीछे आनेवालों का,
जिस पर चलेंगे अनेक,
ले कर प्रेरणा
तुम्हारे ही पदचिन्हों से,
तुम्हें तब पथ का निर्माता
कहा जाएगा,
तब तक तुम चलना
छू लेने को
परिधि स्वयं की,
छोड़ते हुये
पदचिन्ह स्वयं के,
चलते जाना
मत रूकना,
बस चलते जाना

33

पथिक,
चलोगे जब
पथ पर जीवन के
जानने स्वयं को
और छू लेने क्षितिज को,
लेकर स्वप्न भरी आशा,
लेकर अपना ही सहारा,
तुम जब चलोगे,
उठेंगे न जाने
कितने झंझावात
अंतर में तुम्हारे,
उमड़ेंगे भाव
न जाने कितने
अंतर में तुम्हारे!
पथिक,
तुम सह लेना
उन पीड़ाओं को,
जो होंगी,
जब चुभेंगे शूल
इस पथ पर।
तुम सह लेना,
रोक लेना उन्हें,
जो बहते हैं आँखों से
चबा लेना अपने होंठ,
उन्हें सी लेना,
मत निकलने देना आह
अपने अंतर से,
पथिक,
तुम सह लेना।
यह तो
सहना ही पड़ता है
उसे,
जो चलता है
जानने जीवन को
इस पथ पर।

मत रोना,
सह लेना
जीवन पथ की
दुर्गमता को,
जो लगेगी तुम्हें,
कि पार नहीं कर पाओगे,
पर तुम
थामे रहना कस कर
वह स्वप्निल आशा
छू लेने की उस,
हाँ, उसी अज्ञात
क्षितिज को,
जिसे छू लेने ही
तो तुम चले हो।
मत रूकना,
जब तक जान न लो
वह,
जिस के लिये
तुम चले हो,
पथिक,
रूक मत जाना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

34

चलना करोगे
तुम जब प्रारम्भ,
पथिक,
तब जो रोकेंगे तुम्हें
और रोक नहीं पाएंगे,
नहीं हो पाएंगे सफल
रोकने में प्रयाण तुम्हारा,
तब हो सकता है,
वे तुम्हें कोसें,
जागेगी भावना
छोटेपन की
अंतर में उन के,
जो चल नहीं पाए,
क्योंकि साहस नहीं था
चलने का।
वे कहेंगे तुम्हें भगोड़ा
और कहेंगे बातें कितनी ही,
जिन्हें तुम शायद
सह नहीं पाते,
यदि तुम ने
नहीं देखा होता
क्षितिज को,
चले नहीं होते यदि तुम
छू लेने क्षितिज को।
पथिक,
तुम सह लेना
उन के बाण।
कहेंगे वे
कि भरे हैं
अवगुण ही तुम में,
नहीं गुण एक भी तुम में,
होता तो,
बनाते नीड़ तुम भी
और रह जाते
उन्हीं सीमाओं में,

जिन में रहते हैं सभी
बन जाते हैं धूल,
और रह जाते हैं वहीं,
क्योंकि डरते हैं
चलने से,
डरते हैं, तभी तो
रोकते हैं तुम्हें।
तुम पथिक,
बस सुन लेना
सब कुछ
और चल देना,
कह कर उन से
कि नहीं हैं कोई गुण
मेरे चलने में,
मुझे अपना बनानेवालो,
नहीं हैं गुण मुझ में,
और भूल जाओगे तुम
अवगुण सभी,
जब मैं नहीं रहूँगा सामने,
पर अभी मुझे चलना है,
पहुँचना है बहुत दूर।
अब चलूँ कह कर,
पथिक,
चल देना आगे
मत रूकना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

35

पथिक,
जब चल दोगे तुम,
तोड़ कर सारे बंधन,
भुलाकर
गुण अवगुण सभी,
जब चलोगे
उस दुर्गम पथ पर,
थाम कर प्रेरणा की डोर,
लिये आस हृदय में
छू लेने क्षितिज को,
तुम जब बस
चल दोगे,
करते हुए पार
रूकावटें सारी,
तब रखना तुम याद,
जब नहीं हो पाऐंगे
सफल रोकने में तुम्हें
और निकल जाओगे
कुछ दूर,
तब पुकारेगी दुनिया
हँसकर तुम्हें,
सुनोगे दूर से आते
शब्द प्रशंसा के।
पथिक,
तुम सुनोगे,
और लगेगा
कहीं अच्छा बहुत
अंतर में,
तुम चाहोगे,
कि रूक कर
थोड़ा सुन लूँ
प्रशंसा के वे मीठे बोल।
पर सावधान,
सुनकर भी
कर देना अनसुना।

यही तो होगी
वह आखिरी रूकावट,
वह प्रलोभन
जिस में रमे,
तो फिर
चल नहीं पाओगे,
रूक जाओगे, चल कर
बस थोड़े से कदम।
पथिक,
रखना तुम याद –
मत सुनना,
रखना दृष्टि तुम वहाँ,
मिलते हैं
जीवन और मृत्यु जहाँ,
और बस चल देना,
थाम कर
प्रेरणा की डोर
और लिये
आशा अंतर में,
छू लेने क्षितिज को
बस चल देना

36

पथिक,
छोड़कर नीड़ अपना,
लेकर पँख कल्पना के,
रख कर स्वप्न सामने
छू लेने आकाश को,
तुम उड़ना,
छोड़ कर अपनी पीड़ा।
लगेगा पहले
उस व्योम में तुम्हें,
कि खो रहे हो,
नहीं मिल पा रही
दिशा तुम्हें,
जहाँ छू पाते तुम
आकाश को।
पर तुम उड़ना,
लेकर पँख कल्पना से,
पथिक,
छू लेने असीम को
तुम उड़ना!
यह उड़ान ही
तो देगी विश्राम
तुम्हारे चोटिल
बोझिल पाँवों को।
ओ पथिक,
तुम उड़ना!
उड़ते उड़ते,
जब तुम
हो पाओगे स्थिर स्वयं
कल्पना की उड़ान में,
तब तुम पाओगे सामने
विराट अपने।
हो जाएगा क्षितिज भी
विराट उतना,
उड़ोगे तुम ऊँचा जितना
लेकर पँख कल्पना के।

बढ़ेगा विश्वास
तुम्हारा उतना ही,
उड़ोगे तुम
ऊँचे जितने ही।
कर लोगे जब स्वीकार
चुनौती छू लेने को
असीम की सीमा स्वयं ही,
तब रूक नहीं पाओगे,
तेज़ और तेज़,
ऊँचे और ऊँचे
उड़ते ही चले जाओगे।
लेकर कल्पना के
पँखों का सहारा
तुम उड़ना।
दे चुको जब
विश्राम क्षण भर को
अपने चोटिल
घायल पाँवों को,
पथिक,
तब तुम उतर आना
धरातल पर यथार्थ के
और बढ़ जाना आगे,
मत रूकना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

37

लोग देखते हैं
चन्द्रमा को,
होकर आकर्षित
उसके सौंदर्य से,
उस अंधेरी रात में,
जब वह दिखाता है पथ,
फैलाकर अपनी चाँदनी।
जो चलते हैं,
वे लेकर
उस चाँदनी का सहारा
चले जाते हैं आगे,
और जो
नहीं चलना चाहते,
शायद चलना
चाहते ही नहीं थे कभी,
वे ढूँढ़ने लगते हैं धब्बे
चन्द्रमा के मुख पर,
भूल कर उसका प्रकाश,
हाँ, वही चाँदनी,
जिस के सहारे ही तो
वे देख पा रहे थे
उन धब्बों को।
नहीं दिखाता यदि
चन्द्रमा स्वयं
इन धब्बों को,
तो क्या वे देख पाते?
कहते हैं अनेक,
उस की चाँदनी जो है,
वह स्वयं अर्जित वस्तु नहीं,
ली है उस ने सूर्य से,
उस का है ही क्या?
खड़े–खड़े
वे उस में
बस देखते हैं धब्बे।
पर जो चलते हैं पथ पर

सहारे चाँदनी के
उस अंधियारी रात में,
वे जानते हैं,
कि भले ही
चन्द्रमा का प्रकाश
स्वअर्जित नहीं है,
पर वह
चलने वालों के लिए
अपने धब्बे
दिख जाने का डर
छोड़कर भी,
कम से कम
प्रकाश को प्रतिबिम्बित
तो कर रहा है,
कि शायद कोई चले,
जो चाहता हो चलना,
पर भटकता हो अंधेरे में।
उसी के लिए
तो कर रहा है प्रतिबिम्बित
प्रकाश वह,
दिखाते हुए भी
अपनी कमियाँ सारी,
दिखा रहा है राह वह।
पथिक,
तुम देना धन्यवाद उसे,
जिस की चाँदनी के सहारे
तुम चल पा रहे हो
इस घने अंधकार में।
दे कर धन्यवाद उसे,
जो खो जाएगा
क्षितिज के उस पार,
दिखा कर अंधेरे में
तुम्हें राह,
पथिक,
तुम रखना उस को याद,
जिस ने दिखाया है पथ

तुम को अंधेरों में,
फैला कर अपनी चाँदनी,
जिस ने नहीं छुपाए थे
धब्बे अपने
दिखाने को राह उसे,
जो चला है
पथ पर जीवन के।
पथिक,
तुम करना मौन नमन
और बढ़ जाना आगे।
तुम्हारा चलना ही तो
करेगा सार्थक चाँदनी को,
जो की थी
प्रतिबिम्बित उस ने
दिखाने को राह
अंधेरों में
उस के लिये,
जो चलेगा।
पथिक,
तुम चलना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

38

पथिक,
जब तुम चलोगे,
रखना यह याद,
नहीं पड़ेगा अंतर
इससे,
कि सहो
तुम क्या–क्या,
चलते हुए
पथ पर जीवन के
चुनने में लक्ष्य अपना।
तुम सहोगे
आँसू, ठोकर
और सुख के भ्रम
तुम सहोगे।
सहते हुए,
पथिक,
सोचना,
सोचना तुम,
क्या नहीं हो जाता
सब कुछ समाप्त
बिना किसी चिन्ह के?
लेकिन
इस जीवन के
दुर्गम पथ पर
जो
चलते चलते
रख देता है उड़ेल कर
अपना हृदय
कागज के
चंद पन्नों पर
और बढ़ जाता है आगे
पथ पर जीवन के,
हाँ, उसी दुर्गम पथ पर,
छोड़ कर पदचिन्ह –
उस का जाना

निश्चित है।
छोड़ दोगे पदचिन्ह,
पथिक,
जब तुम,
तब शायद
समझ पाओगे –
निहित है सार्थकता
जीवन की
कहीं पदचिन्ह छोड़ने में ही।
पदचिन्ह छोड़ कर ही
तुम यह समझ पाओगे।
पथिक,
मत भूलना यह
छोड़ते हुऐ पदचिन्ह
जीवन के दुर्गम पथ पर,
तुम चलते रहना,
मत रूकना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

39

पथिक,
तुम देख लोगे
स्वप्न जब
छू लेने का
क्षितिज को,
पहुँचने का वहाँ,
जहाँ मिलते हुए से
दिखते हैं
जीवन और मृत्यु,
चल दोगे जब तुम
करने साकार
स्वप्न को अपने,
तुम जब चलोगे
और बढ़ जाओगे आगे,
तब समझ पाओगे
कि कैसे चला जाता है।
चल कर पथ पर
जीवन के,
देखोगे सुन्दरता
बिखरी हुई सब ओर,
पार करते हुए
बाधाऐं पथ की,
तब देख पाओगे
बाधाओं का भी सौंदर्य,
जो आता हैं सामने
उन्हें पार कर लेने पर,
तब करोगे तुम याद
उस भीड़ की,
जो मिली थी
तुम्हें तब,
जब तुम ने रखे थे
कुछ ही कदम,
चलना शुरू ही किया था
तुम ने, ले कर
वह स्वप्निल आशा

अंतर में।
आएगी तुम्हें याद,
लगेगा एक बार
कि बुला लूँ,
बुला लूँ
उस भीड़ को भी,
जागेगी करूणा
अंतर में उस के लिये
जिस ने रोका था,
मिलाना चाहा था
तुम्हें स्वयं में,
डराया था,
धिक्कारा भी था,
पर तुम्हें
रोक नहीं पाई,
चलना
अधिक आवश्यक था
तुम्हारे लिये
रूकने से,
तुम रूक नहीं पाए,
तुम्हें चलना ही था,
तो तुम चले।
कर के याद
उस भीड़ की,
चाहोगे तुम,
बुला लूँ,
देख ले वह भी
इस बिखरे सौंदर्य को
देख पाऐ वह भी
क्षितिज को,
पर पथिक,
तुम रूकना,
सोचना।
सोचोगे तो
समझ जाओगे –
भीड़ के कान

नहीं होते,
जिन से सुने वह
किसी की पुकार,
आँखें भी
शायद नहीं होती,
जिन से देख पाती
सुन्दरता जीवन की।
तुम सोचना,
मत देना
तुम आवाज,
बढ़ जाना आगे
छोड़ कर पदचिन्ह,
जिन से प्रेरित हो
जिसे भी चलना हो,
वह तो चलेगा ही,
छोड़ कर
भीड़ की चिंता।
पथिक,
तुम चल देना,
मत रूकना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

40

जीवन के कीचड़ में
गिर जाओ जब तुम,
पथिक,
और जब लगे तुम्हें,
कि छुटा नहीं पाओगे
इस मल को,
जो चढ़ गया तुम पर,
चलते चलते
पथ पर जीवन के,
तुम मत होना उदास।
मत होना तुम उदास,
कि सन गये हो
कीचड़ में,
और नहीं हैं
कुछ ऐसा,
जिस से धो पाते तुम,
कर पाते साफ
स्वयं को।
मत होना तुम उदास।
गिरकर भी
इस कीचड़ में,
जिस में गिरते हैं
अनेक
और रह जाते हैं
खो कर,
करते हुए घृणा
स्वयं से,
उन जैसे
मत हो जाना तुम।
नहीं कर पाओ दूर
इसे जब तुम,
बना कर आधार
इसी कीचड़ को
जिस में तुम गिरे हो,
बना कर आधार

इसी को
पथिक,
जमा लेना जड़ें
इसी में
और बन कर कमल,
खिल जाना।
उठ जाना
जीवन की
कीचड़ भरी सीमाओं से।
बन कर कमल,
राह तुम नई
पा जाओगे,
फिर रूक न सकोगे,
चलते ही जाओगे।
पर यह चलना
होगा कुछ अलग
इस बार।
तुम चलोगे,
ले कर सुगंध
कमल की
इस बार,
कर के परिवर्तित
कीचड़ को
सुगन्धित सौन्दर्य में।
तुम चलोगे
छू लेने क्षितिज,
छोड़ कर पीछे
उसी कीचड़ को,
जिस के कारण
तुम बन पाए कमल।
पथिक,
बस चल देना आगे,
मत रूकना,
चलते जाना,
बन कर पंक से पंकज,
तुम चलते जाना

41

जागेगी जब
चेतना तुम में,
तुम पाओगे
कि जो भी हुआ है,
वह रहता है कहीं
समय की धारा में,
पकड़ कर कुछ,
कुछ भी,
बनाये रखने को
अस्तित्व अपना,
वह थामे रहता है
कुछ भी।
पथिक,
जागेगी जब
चेतना तुम में,
तुम पाओगे
कि थामे हो
तुम भी कुछ
और समझ पाओगे –
कुछ थामे रहना ही तो
बन जाता है
जीने का ढंग
सभी का,
जो रहते हैं
समय की धारा में
थामे हुए कुछ,
बनाये रखने को
अस्तित्व अपना।
पर ऐसे जीते हुए
क्या बचा पाते हैं
अस्तित्व अपना?
तुम छोड़ देना उसे,
थामे हो जिसे तुम
जन्म से,
तुम छोड़ देना,

बह जाने देना
स्वयं को
समय की धारा में,
जिस में रहने के कारण ही
उसे देख नहीं पाते तुम,
पर वह तो है,
बहती हुई छू लेने
उसी अज्ञात क्षितिज को।
बह जाना तुम भी
साथ उस के,
मत थामना कुछ भी,
तुम छोड़ देना
और बस बह जाना।
ले जायेगी वह
बहा कर साथ
तुम्हें वहीं,
जहाँ जाने के लिए
देख रहे हो स्वप्न तुम।
छोड़ देना,
मत थामना फिर कुछ
और बह जाना आगे
बहते हुये समय की धारा में।
तुम पाओगे
कि नहीं है जीवन
समय के अतिरिक्त
और कुछ भी,
है वह बस
एक बुलबुला
समय का,
जो बह रहा है
समय की धारा में ही।
तुम मत डरना
कि फूटेगा कभी
बुलबुला जीवन का
बहते हुये समय की धारा में,
तुम मत डरना

बस बहते जाना।
फूट जाये यदि बुलबुला
जीवन का तुम्हारे,
तब भी
तुम मत डरना।
समझ पाओगे
बहते हुये तुम –
फूटेगा बुलबुला जब
जीवन का तुम्हारे,
तभी हो पाओगे
एकाकार उस से,
जिस में तुम
बह रहे हो,
मत थामना
कुछ भी,
छोड़ देना
सब कुछ
और बह जाना
समय की धारा में

42

अपने ह्रदय के
भावों को
चुन लाने के लिये,
जो रहते हैं
कहीं छुपे हुए
ह्रदय की
उस गहराई में,
जिसे समझने को,
जिस की थाह लेने को
साहस नहीं होता,
हाँ, उसी गहराई की,
जो रहती है
हम सभी में,
पर लगता है
जैसे कि वह
कहीं नहीं है,
नहीं पता,
कहीं भी है
कि नहीं,
तुम डूब जाना
स्वयं
अपने ही ह्रदय में
और चुन लेना
उस में
छुपे हुए भावों के मोती,
झिलमिलाते हुए,
बिखेर देना
ला कर उन्हें
पथ पर जीवन के,
जो तुम्हीं तो
ला पाओगे
उतर कर
ह्रदय में अपने।
पथिक,
तुम डूब जाना,

मत डरना,
जब तक कि उन्हें
खोज न लो।
पथ पर जीवन के
चलते हुए
अपने हृदय की
गहराई से
तुम चुन लाना
स्वयं वही,
हाँ, वही मोती,
जिस की चाह,
जिसे पाने की ललक
देगी तुम्हें प्रेरणा
डूब जाने की।
पथिक,
पा न लो
जब तक उसे,
तुम मत रूकना
और न होना उदास।
ले कर साँसों की पूँजी
और प्रेरणा हृदय में,
तुम डूब जाना
स्वयं ही
स्वयं की गहराई में
और खोज लाना
वह भाव,
हाँ, वही भाव,
जो ले जाएगा तुम्हें
क्षितिज के उस पार।
खोज न लो
जब तक उसे तुम,
तब तक पथिक,
मत हारना हिम्मत,
थाम कर
प्रेरणा की डोर,
तुम डूब जाना

और ले आना उसे।
पथिक,
ले कर उसे,
हाँ, उसी को,
तुम चल देना आगे,
मत रूकना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

43

तुम जब चलोगे
पथ पर जीवन के,
सहते हुये
पथ पर बिखरे
काँटों की चुभन,
ले कर स्वप्न
अंतर में
छू लेने को
क्षितिज
जब तुम चलोगे,
सहोगे तब तुम
न जाने क्या क्या,
शायद वह,
जिसे कहते हैं
दुःख वे,
जो नहीं चलते,
डर कर पथ की
दुर्गमता से,
रह जाते हैं कहीं
सुख की कल्पना में,
कर के सीमित
स्वयं को।
जो रह जाते हैं,
वे कहेंगे,
क्यों उठाते हो
दुःख?
चलने में ही है क्या?
वहाँ,
उस अज्ञात को
जान लने में
मिलेंगे बस काँटे
और ठोकरें ही
जीवन में,
तुम रहो यहीं,
साथ हमारे

बना कर नीड़ अपना।
पथिक,
सब सुन लेना,
तुम सह लेना
पथ पर बिखरे
काँटों की चुभन,
खा लेना ठोकरें,
जो खानी ही पड़ती हैं
उसे,
जो चलता है
उस दुर्गम पथ पर
छू लेने को
क्षितिज।
तुम सह लेना
सारे कष्ट,
जिन्हें समझते हैं
न चलनेवाले
दुःख।
जहाँ भी
जब भी
तुम छू लोगे
अपना क्षितिज
और चले जाओगे
उस के पार,
तब जो मिलेगा
संतोष तुम्हें
कर के साकार
स्वप्न को अपने,
उस के लिए
जो सहा है तुम ने,
क्या याद
कर पाओगे उसे?
पथिक,
तुम डूब जाओगे
क्षितिज को
छू लेने के आनंद में!

पर जब तक यह हो,
तब तक घबरा कर
दुःख से
और काँटों की चुभन से,
पथिक,
तुम रूक मत जाना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

44

चलने को
बताते हुए महान
और स्वयं को
चलनेवाला पथ पर,
खोये हुए
रहते हैं अनेक,
जीते हुए
एक सुखद कल्पना में,
जो नहीं ले जाती
कहीं भी,
पर देती है उन्हें
एक सुखद सा भ्रम
पथ पर चलने का।
समझते हैं ऐसे
स्वयं को
एक भावुक हृदय का स्वामी,
होते हुए भी निर्मम,
करते हैं बात
करने की सुगम पथ को।
पर उन का यह भाव
होता है उतना ही गहरा
होती है जितनी पतली
त्वचा उन की।
चाहते हैं ये
सिर्फ प्रभावित करना
उस भीड़ को,
जो रोकती है उसे,
जो चलता है चुपचाप
छू लेने क्षितिज को।
ले कर स्वप्न
आँखों में
जानने परिधी
स्वयं की,
वह तो चलता है
चुपचाप,

नहीं रोक पाता
उसे कोई,
और न वह
करता है बात
पथ को
प्रशस्त करने की,
वह तो बस
चल पड़ता है,
लिये मौन प्रेरणा
हृदय में,
थाम कर सांसों की डोर,
पीछे उसी
स्वप्निल आशा के,
जो ले जाती है उसे
क्षितिज तक।
लेकिन वे,
जो पालते हैं
सुखद भ्रम
स्वयं के पथ पर
चलने का,
करते प्रभावित
उस भीड़ को,
जो रोकती है
चलनेवाले को,
उन जैसे
मत हो जाना तुम।
पथिक,
रखना तुम याद –
मत पालना भ्रम
चलने का,
मत समझना तुम
स्वयं को
भावुक अधिक दूसरों से,
यह भ्रम ही तो है,
जो रोकता है
सभी को

चलने से।
तुम तो बस चल पड़ना,
ले कर स्वप्न आँखों में
छू लेने को क्षितिज
तुम चल पड़ना,
मत रूकना,
बस चलते जाना

45

पथ पर जीवन के
चलते हुए,
पथिक,
यदि मुड़ जाओ कभी
किसी अंधी गली में,
जो लगती तो है
लुभावनी पहले,
पर फँसा देती है
अंधेरों में,
हाँ, तो यदि
तुम फँस जाओ
ऐसी ही किसी गली में,
उस के अंधेरे में
हो जाओ जब
असमर्थ
देख पाने में
क्षितिज
और स्वयं ही
स्वयं को,
तब रखना तुम याद,
यहाँ कितने ही
फँस कर रह गये
सुख की कल्पना में,
पालते हुए
भ्रम अनेक
बनाने नीड़ अपना,
वह कल्पना,
जो दे सकी
उन्हें मात्र
सुख का एक भ्रम,
मिला दिया उन्हें
धूल में,
दे कर आशाएँ अनेक,
नहीं देखने दिया
क्षितिज की ओर,

फँसा कर उन्हें
जीवन के अंधेरों में,
मत भुलना –
अंधकार का अभ्यस्त
हो जाने पर
प्रकाश कष्ट
देने लगता है।
पथिक,
रखना तुम याद यह
और न घबराना
कि अब क्या होगा।
उस से पहले कि तुम
हो जाओ अभ्यस्त
अंधेरे के
और डरने लगो
खोलने से आँखें
स्वयं की,
तुम लौट आना,
लौट आना तुम,
मत रूकना,
भर कर करूणा से भी
उन के लिये,
जो फँसे हैं
किसी अंधी गली के
अंधेरे में,
तुम लौट आना वापस।
जहाँ से भी देख पाओ
क्षितिज को
वहीं से ले कर
स्वप्न आँखों में
छू लेने उसे,
तुम बस चल पड़ना
उसी की ओर,
जान लेने
परिधी को अपनी,
तुम बस चल देना,

मत रूकना
जब तक कि
छू न लो क्षितिज,
बस चलते जाना

46

पथ पर जीवन के,
पथिक,
जब तुम चलोगे,
ले कर स्वप्न
आँखों में
छू लेने को
क्षितिज,
लिये काँपता हृदय
और आशा अंतर में,
पथिक,
जब तुम करोगे
प्रारम्भ चलने का,
तब हो सकता है
अपने भोले उत्साह में
तुम आ जाओ
किसी की अपनी सी
लगनेवाली बातों में,
जो की जाती हैं
रोकने उन्हें,
जो चलते हैं
छू लेने को
क्षितिज।
अपनी सी
लगनेवाली वाणी
फँसा दे जब तुम्हें
अंधी गलियों में,
जो मिलेंगी
पथ पर जीवन के,
जब तक तुम सम्भलो,
लगे तुम्हें तब
कि बहुत देर हो गई
और लेने लगे जन्म
संदेह
अंतर में तुम्हारे
कि अब चल पाऊँगा

कि नहीं।
करोगे अनुभव तुम
क्रोध भरी कुंठा भी,
क्रोध,
जो जन्म लेगा
रूक जाने की
कुंठा से,
कर सकते हो
घृणा तुम
उस अपनी सी
लगनेवाली वाणी से,
जिस ने फँसा दिया
तुम्हें जीवन के
किसी अंधे मोड़ पर,
दोगे दोष भी
उसे तुम बहुत,
पर सावधान,
पथिक!
यदि समझ पाये हो,
कि तुम फँसे थे,
और घिर जाओगे
द्विविधा में
कि अब चल पाओगे
कि नहीं,
तुम रहना सावधान!
एक बार देख कर
क्षितिज को,
बस चल देना,
मत रूकना
देने किसी को दोष
क्रोधित कुंठा में।
दोष देते रहने में
गँवा चुके कितने
वर्तमान अपना!
वर्तमान गँवा कर,
भविष्य भी

वे खो चुके अपना।
उन जैसे
मत हो जाना तुम,
ले कर गहरी साँस
और अनुभव
फँस जाने का,
बस देख कर
क्षितिज की ओर,
तुम चल देना आगे,
मत रूकना
और न देना दोष
किसी को।
चल दोगे तो
समय भी कहाँ होगा
तुम्हारे पास
दोष देने का
किसी को,
तुम तो बस चल देना
क्षितिज की ओर,
दे कर सहारा
स्वयं ही स्वयं को
तुम बढ़ जाना आगे,
मत रूकना,
बस चलते जाना

47

चलते चलते
पथ पर जीवन के,
मिल जाए यदि
कोई ऐसा,
जो चले साथ तुम्हारे,
ले कर प्रेरणा
तुम्हारे स्वप्न से
छू लेने की क्षितिज,
चल दे वह भी,
छोड़ कर
सब कुछ,
लिये काँपता ह्रदय
और तुम्हारे साथ
चल देने का आनंद
ह्रदय में,
हो कर प्रेरित
स्वप्न से तुम्हारे,
मिले यदि कोई
साथ देता हुआ तुम्हें,
तो ले कर
उस का हाथ
अपने हाथों में,
पथिक,
तुम देखते हुये
अनंत की ओर
बढ़ना छू लेने
क्षितिज को,
लेते हुए सहारा
उस का,
देते हुए उसे
सहारा अपना
तुम चलते जाना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना।
चलते चलते,

यदि कहीं
साथी तुम्हारा
हो जाये थक कर चूर
और आगे जाना,
आगे चलना
उस के लिये
हो जाये असम्भव,
ले कर अपने
थके चोटिल पाँव,
उस का थक जाना
जब देने लगे बाधा
तुम्हारे बढ़ने में
और तुम
मोह में फँस कर
चाहो कि
साथ में उस के
रूक जाऊँ,
जो होगा
स्वाभाविक सा ही,
क्योंकि कुछ दूर
साथ चलने से
होनेवाली मित्रता
बांध देती है
व्यक्ति को
मोह के बंधन में।
पथिक,
रहना तुम
सावधान,
छोड़ कर हाथ
उस का,
देख कर करूणा से
अपने साथी को
आँख भर के,
ले कर एक ठंडी साँस,
बढ़ जाना आगे,
मत फँसना तुम

मोह के बंधन में,
क्योंकि तुम्हें पहुँचना है
क्षितिज तक।
तुम रूक गये
देने सहारा,
तो फिर
चल नहीं पाओगे।
पथिक,
तुम कहना
साथी से अपने,
कि कर लो विश्राम
क्षण भर को,
फिर चलना,
मैं मिलूँगा तुम्हें
करता हुआ प्रतीक्षा
क्षितिज पर,
करूँगा मैं वहीं
स्वागत तुम्हारा,
तुम आना
कर के विश्राम
थोड़ा सा,
मिलेंगे हम तुम
वहीं,
क्षितिज पर,
रूक मत जाना,
चले आना।
इतना कह कर,
पथिक,
चल देना आगे,
मत रूकना,
तुम चलते जाना
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

48

तुम जब चलोगे
छोड़ कर मोह,
सारे बंधन
करूणा के,
जब भीड़ भी
न हो पाये सफल
रोकने में तुम्हें,
मित्रता का बंधन भी
छोड़ कर,
तुम जब चलोगे
पथ पर जीवन के,
ले कर स्वप्न
आँखों में
और प्रेरणा
अंतर में,
पथिक,
रहना तुम
सावधान!
जब नहीं हो पायेंगे
सफल रोकने में तुम्हें
वे, जो पहले
लगते होंगे अपने से,
पर सुननी ही पड़ेंगी
तुम्हें उन की
बातें अनेक,
जो कर देंगी
घायल तुम्हें,
छेद देंगी
अंतर को तुम्हारे,
लगेंगे न जाने कितने
लाँछन तुम पर,
तुम सह लेना।
होगा बहुत कठिन
सह लेना
वाणी के घाव,

जो लगेंगे
गहरे बहुत,
पर सहना ही होंगे,
क्योंकि तुम चले हो
छू लेने को क्षितिज,
जानने परिधि
स्वयं की।
तुम्हारे चल देने से
जो हो गये होंगे कुंठित
स्वयं से,
उन्हीं की ईर्ष्या
निकलेगी लिपटी हुई
क्रोध से,
कड़वी बोली बन कर,
करने घायल तुम्हें,
तुम सह लेना
चुपचाप
और रहना
सावधान,
मत करना
घृणा उन से,
जो बोलेंगे
कही–अनकही
करने को क्षीण
उत्साह तुम्हारा,
तुम मत करना घृणा,
तुम बचना इस से।
यही तो होगा
वह बंधन,
जो होगा प्रबल
सभी से,
जिस से बच पाना
होगा थोड़ा कठिन,
तुम मत पड़ना
घृणा के बंधन में,
रहना तुम सावधान।

पथ पर रह गये
अनेक,
बन कर धुल,
जो बच पाये थे
बंधन से मित्रता के,
भीड़ भी जिन्हें,
रोक नहीं पाई थी,
वे भी चलते चलते,
बंध कर कहीं
घृणा के बंधन में,
बन कर रह गये
धुल पथ की,
पथिक,
तुम बचना
घृणा के बंधन से,
रहना सावधान,
मत हटाना दृष्टि
क्षितिज से,
मत मानना
शत्रु किसी को,
मत करना घृणा
किसी से,
सह लेना
सब कुछ
चुपचाप।
बस ले कर स्वप्न
आँखो में
और प्रेरणा
अंतर में,
तुम बढ़ जाना आगे,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

49

चलते हुए
पथ पर जीवन के,
सहते हुये
पथ पर बिखरे हुए
काँटों की चुभन,
रोकते हुए उन्हें,
जो बहते हैं
आँखों से,
सी कर अपने होंठ,
सराहते हुए
सौंदर्य काँटों का,
जो कभी मुरझाते नहीं,
बचते हुए
बाधाओं से
पथ को रोकनेवाली,
जब तुम बढ़ोगे
छू लेने को क्षितिज,
करते हुए अनुभव
जीवन में भावों का,
लिये अंतर में
क्षितिज को
छू लेने का भाव,
और स्वप्न
आँखों में,
देखते हुए अनंत,
जहाँ मिलते से
दिखते हैं
जीवन और मृत्यु,
जब तुम चल रहे होगे
पथ पर जीवन के,
जिस की दुर्गमता
मिला देती है
बहुतों को धूल में,
उसी धूल पर
छोड़ते हुए पदचिन्ह,

जब तुम चल रहे होगे
पथ पर जीवन के,
करते हुए अनुभव
भावों का
उन की पूर्णता में,
तब तुम समझोगे कभी,
कि जिन में
भावों का होता है
अभाव,
वे कर देते हैं हत्या
कोमल भावों की
उठनेवाले
किसी के अंतर से,
कुचल देना ही
कोमल भावों को
होता है साधन
मनोरंजन का
उन का, जिन में
होता है अभाव
भावों का।
पथिक,
उन जैसे
मत हो जाना तुम,
चलते हुये
पथ पर जीवन के।
यह क्रूरता
लेती है जन्म
न चल पाने की
कुण्ठा से।
तुम बचना इस से,
करना सम्मान
हर उस कोमल भाव का,
जो उठता है
अंतर में
उस के,
जो देख पाता है

क्षितिज
और देखता है
स्वप्न
उसे छू लेने का।
पथिक,
भावों की
हत्या करनेवालों से
बचते हुये,
तुम बढ़ जाना आगे,
चलते चले जाना
पथ पर जीवन के,
छू लेने से पहले
क्षितिज को
तुम मत रूकना,
बस चलते जाना

50

चलते हुये
पथ पर जीवन के
छू लेने को क्षितिज,
लिये काँपता हृदय
और अज्ञात को
जान पाने की सिहरन
अंतर में
पथिक,
जब चलोगे,
देखोगे तब तुम,
जिसे कहते हैं
मानवता,
हाँ, वही मानवता शब्द,
जिस के गुण–गान
सुनते हुये,
तुम चल रहे हो
जाने लेने को
जीवन और मृत्यु,
तुम तब समझ पाओगे
चलते हुये
पथ पर जीवन के
कि मानव से
अधिक क्रूर
और नहीं है
इस सृष्टि में कोई,
जो दिखा पाता हो
मानव से
अधिक क्रूरता
अपनों के लिये।
हाँ, यह मानव ही तो है,
जो ले कर नाम
मानवता का,
करता है वह,
जो होता है
अमानवीय।

तुम यह समझोगे –
जो कुछ भी
कहा जाता है
अमानवीय,
वह करता है
एक मानव ही।
तुम देखोगे,
जो होता है
अमानवीय,
वह किया जाता है
एक मानव द्वारा ही।
लगेंगे पशु तुम्हें
श्रेष्ठ मानव से,
क्योंकि वे मारते हैं
बस पेट भरने को,
और मानव,
वह मारता है मात्र
सिध्द करने को
श्रेष्ठता स्वयं की
दूसरे मानवों पर,
वह नहीं देता
सहानुभुती
दूसरे मानव को।
पथिक,
यह देख कर,
तुम घबराओगे,
काँपेगा ह्रदय तुम्हारा
ग्लानि भी
हो सकती है तुम्हें
स्वयं के
मानव होने पर,
फिर भी तुम
मत होना उदास।
मत होना तुम उदास
कि एक मानव हो,
देख कर क्रूरता

मानवों की।
चलते हुये
पथ पर जीवन के,
तुम दिखा देना उन्हें
अपना मानवीय पक्ष,
दिखाना उन्हें
कि एक मानव
क्रूरता छोड़ कर
संवेदनशील भी
हो सकता है,
बहा सकता है
दो आँसू
देख कर वह
किसी को पीड़ा में,
चल सकता है
कोई
जान लेने
स्वयं को
पथ पर जीवन के,
छू लेने क्षितिज,
जानने सीमाएँ
स्वयं की।
पथिक,
तुम सच्चे अर्थों में
मानव बन जाना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना

51

समय का
कोई भाव नहीं होता,
पर हर भाव का
होता है एक समय।
समझ पाओगे,
पथिक, तुम यह
चलते हुये
पथ पर जीवन के।
जिसे तुम
समझ रहे थे
जीवन,
वह नहीं था
समय के अतिरिक्त
कुछ भी।
पर तुम समझ पाये यह,
पहुँच कर क्षितिज तक,
उसे छू कर
वहीं,
जहाँ मिलते से
दिखते हैं
जीवन और मृत्यु,
जिस मिलन के
सौंदर्य से
हो कर आकर्षित,
तुम चले थे,
ले कर प्रेरणा
स्वप्न से अपने,
लिये काँपता हृदय,
पीछे उस स्वप्निल आशा के,
जो ले आई तुम्हें यहाँ,
जहाँ तुम खड़े हो।
पा कर अपना क्षितिज,
जान कर सीमाएँ स्वयं की,
तुम जान पाये हो
कि नहीं है

समय के अतिरिक्त
और कुछ भी,
समय से ही
हुआ है उत्पन्न
सभी कुछ –
पथ भी और
तुम स्वयं भी।
जीते हुये
समय की धारा में
समय ही के सहारे,
कुछ थामे रहने के भ्रम में
बचाये रखने को
अस्तित्व स्वयं का,
खो गये अनेक
समय ही में कहीं,
नहीं बचा कोई
चिन्ह उन का,
जो चाहते थे बचाना
बस अस्तित्व
स्वयं का।
पथिक,
तुम ने छोड़ दिया
सब कुछ
क्योंकि छू लेना
क्षितिज को,
जान लेना प्रेम
जीवन और मृत्यु का
महत्वपूर्ण था
तुम्हारे लिये
अस्तित्व बचाये रखने से।
तुम चले,
बह जाने दिया
स्वयं को
समय की धारा में,
छोड़ते हुये
चिन्ह स्वयं के

समय में ही कहीं,
तुम बहे,
पहुँचे क्षितिज तक,
तभी तो जान पाये हो
अस्तित्व समय का।
तुम्हारा जीवन भी तो था
बस एक बुलबुला
समय का,
जो बहा
समय की धारा में।
पा कर अपना क्षितिज,
फूटा है बुलबुला
जीवन का तुम्हारा,
और जान कर
समय को
तुम मिल गये हो
समय में ही।
पथिक,
कर लिया तुम ने
सार्थक चलना,
तुम चले,
तो नहीं रूके कहीं
छू लेने से पहले क्षितिज,
तुम बस चलते ही तो गये

52

जानना शुरू करोगे
जब तुम प्रकाश को,
तब समझोगे
कि प्रकाश को
जान लेने से
होता है प्रारम्भ
समय को
जान लेने का।
समझ पाओगे –
प्रकाश की सीमा
पार कर के ही
होता है प्रारम्भ
असीम की सीमा में
डूबते चले जाने का।
समझ सकोगे यह,
जब जान लोगे
प्रकाश को,
प्रकाश,
वह प्रकाश,
जिस के कारण ही तो
देख पाते हो पथ को
और पथ पर
बिखरी धूल पर
आगे चले जानेवालों के
छूटे हुये पदचिन्ह।
तुम देख सकते हो
सहारे इसी प्रकाश के,
जिसे देखते हैं सभी,
थामे रहने के लिये
करते हैं प्रयास भी,
क्योंकि डरते हैं
अंधेरे से।
पर तुम समझोगे
जान लेने के प्रयास में
प्रकाश को –

अंधेरे से डरनेवाले
डरते हैं प्रकाश से भी,
उस के तेज की प्रखरता
कर देती है बंद
आँखें उन की।
तुम मत करना बंद
खोले रखना
अपनी आँखों को,
मत करना बंद!
यदि डरे तुम
प्रकाश से,
तो फिर डूब जाओगे
अंधेरे में,
अंधेरे में डूब कर,
फिर चल नहीं पाओगे,
देख नहीं सकोगे
पथ को
और न आगे
चले जानेवालों के
छोड़े हुए पदचिन्हों को,
जिन से ले पाते
तुम प्रेरणा,
रह जाओगे
अंधेरे में।
तुम मत डरना
प्रकाश से,
मत करना बंद आँखें,
हो कर चकाचौंध
उस के तेज से।
रखना तुम याद यह,
सहन करते हुए
उस की प्रखरता,
तुम खोले रखना
आँखों को!
तब जान पाओगे,
जब पार कर जाओगे

उस के तेज की प्रखरता
और जान लोगे
उस प्रकाश को,
तब समझोगे –
प्रकाश को
जान लेने से
होता है प्रारंभ
समय को
जान लेने का,
यही है वह सीमा,
जिसे पार कर के
पार कर लेनेवाला
डूब जाता है
असीम में,
जान पाता है वह
समय को।
तुम मत रूकना
और न होना उदास।
होने लगें
आँखें जब
तुम्हारी चकाचौंध
और भर जायें
आँसुओं से,
देख कर उस के
तेज की प्रखरता,
तब तुम कर के साहस
थोड़ा सा,
बढ़ते ही चले जाना
पथ पर जीवन के,
मत रूकना,
पथिक,
बस चलते जाना

53

जिस क्षितिज को
देखते हुए,
तुम चल रहे हो,
बस है वह
दृष्टि की एक सीमा,
जिस के पार
नहीं देख पाते तुम,
दृष्टि उठाने से
डरते हो शायद,
पर छू कर
इस सीमा को,
तुम तोड़ सकोगे
अपनी सीमितता का
एक बंधन।
एक सीमा पार करोगे,
तभी तो समझ पाओगे,
कि एक सीमा
पार कर जाने के बाद
होता है प्रारंभ
दूसरी विराट सीमा का।
तुम एक एक कर के
सीमाएँ पार करते
चले जाना,
खोज लेना नए क्षितिज
अपने लिए स्वयं।
जितने भी क्षितिज
पार करोगे
उतने विराट भी
तुम्हीं होगे,
मत रूकना
किसी सीमा पर,
मत घबराना
किसी सीमा से,
तुम तो बस ले कर
थोड़ा सा साहस

अन्तर में
और स्वप्न आँखों में
बढ़ते चले जाना,
छू लेने को क्षितिज
बस चलते जाना